>

Title : Need to develop Taregna near Patna, Bihar as a Centre for Research and Study in Astronomy.

श्री राधा मोहन सिंह (पूर्वी चम्पारण): मैं केन्द्र सरकार का ध्यान आर्यभट्ट की कर्मभूमि तारेगाना की ओर दिलाना चाहता हूं। आर्यट्ट का जन्म 476 ई में पाटलिपुत्र में हुआ था। कहा जाता है कि तारेगना में उनकी प्रयोगशाला थी जहां वह बैठकर रात में तारे गिना करते थे एवं खगोलीय पिंडो की गति एवं उसकी प्रगति का अध्ययन करते थे। यह वही स्थान है जहां उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक आर्यभट्टिया की रचना की। इसमें उन्होंने गणित और ज्योतिष विद्या का विशद् वर्णन किया। आर्यभट्ट ने ही सबसे पहले शून्य का प्रयोग किया जो आज विज्ञान का आधार माना जाता है। यही वजह है कि जब देश ने 19 अप्रैल 1975 को अपना पहला उपग्रह प्रक्षेपित किया तो उनके सम्मान में उसका नाम आर्यभट्ट रखा गया। यह मात्र संयोग नहीं है कि लगभग 1500 वर्ष बाद फिर तारेगना खगोलीय घटनाओं को लेकर चर्चा में है। हाल ही में सूर्यग्रहण के दौरान तारेगना में देशभर के वैज्ञानिकों, खगोलविदों, एवं ज्योतिषों का मेला लगा हुआ था। अधिकारिक सूत्रों के अनुसार यहां भारी संख्या में एस्ट्रो टूरिस्ट के आने का सिलसिला जारी था यहां लगभग दो लाख से अधिक लोगों का जमावड़ा हुआ। इस दौरान यहां वैज्ञानिकों ने कई तरह के शोध एवं प्रयोग किए। तमाम अध्ययनों के बाद वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला था कि पटना से सटे तारेगना में सूर्यग्रहण सबसे बेहतरीन ढंग से देखा जा सकेगा।

मेरा केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि तारेगना को खगोलिय घटनाओं के अध्ययन के लिए विकसित किया जाए और इसका विकास किया जाए।